

हिंदी साहित्य के इतिहास लेखन की समस्या

डॉ गणेश शंकर पांडे

सहायक अध्यापक

हिंदी विभाग

दुर्गा कॉलेज रायपुर

प्रस्तावना:

हिंदी साहित्य का इतिहास लेखन केवल साहित्यिक कृतियों की सूची नहीं है, बल्कि यह उन सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक और भाषायी परिवर्तनों का दस्तावेज़ है जिनका प्रभाव साहित्य पर पड़ा। परंतु इसके इतिहास लेखन में कई समस्याएं और चुनौतियाँ हैं।

मुख्य समस्याएँ:

1. इतिहास लेखन की दृष्टिकोण की समस्या:

अलग-अलग विद्वानों ने अलग-अलग दृष्टिकोणों से इतिहास लिखा:

संप्रदायवादी दृष्टिकोण (जैसे रामचंद्र शुक्ल)

सांप्रदायिक दृष्टिकोण (जैसे मिश्र बंधु)

मार्क्सवादी दृष्टिकोण (जैसे नामवर सिंह)

नारीवादी, दलित साहित्यिक दृष्टिकोण (आधुनिक समय में)

इन विविध दृष्टिकोणों के कारण एक समग्र और संतुलित इतिहास की रचना कठिन हो जाती है।

2. स्रोत सामग्री की कमी:

प्राचीन और मध्यकालीन साहित्य के पर्याप्त प्रमाण उपलब्ध नहीं हैं।
बहुत-सी रचनाएँ लोक परंपरा में मौखिक रूप से रही हैं, जो लिखित नहीं हो पाईं।
कुछ रचनाएँ लुप्त हो गईं या नष्ट कर दी गईं।

3. भाषा और लिपि की विविधता:

हिंदी साहित्य की विकास यात्रा में अनेक भाषाएँ शामिल हैं: अपभ्रंश, अवहट्ट, ब्रज, अवधी, खड़ी बोली आदि।

कई बार इतिहासकारों ने खड़ी बोली को ही 'हिंदी' मान लिया, जिससे अन्य बोलियों का महत्व कम आँका गया।

4. काल-विभाजन की समस्या:

साहित्यिक काल विभाजन पर एकरूपता नहीं है। जैसे:

शुक्लजी का काल विभाजन – आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल, आधुनिक काल
कुछ आलोचक रीतिकाल को साहित्यहीन मानते हैं।

आधुनिक इतिहासकारों ने नए आधारों पर काल विभाजन करने का प्रयास किया है (जैसे सामाजिक, राजनीतिक या वैचारिक आधार)।

5. आलोचकीय पक्षपात:

कई इतिहासकार अपने विचारों और पसंद-नापसंद के आधार पर लेखकों और रचनाओं को महत्व देते हैं।

इससे कुछ महत्वपूर्ण रचनाएँ उपेक्षित रह जाती हैं।

6. क्षेत्रीयता और जातीयता का प्रभाव:

कुछ लेखकों ने अपने क्षेत्र या जाति विशेष के साहित्य को प्रमुखता दी है जिससे निष्पक्षता प्रभावित होती है।

7. लोक साहित्य की उपेक्षा:

परंपरागत इतिहास लेखन में लोक साहित्य को उचित स्थान नहीं मिला।
आधुनिक शोधों ने लोक साहित्य की भूमिका को उजागर किया है, पर यह अब भी पूर्णतः सम्मिलित नहीं हो पाया है।

निष्कर्ष:

हिंदी साहित्य का इतिहास लेखन एक जटिल कार्य है जिसमें विविध दृष्टिकोणों, भाषाओं, कालखंडों और स्रोतों की भूमिका होती है। एक समावेशी, संतुलित, और आलोचनात्मक दृष्टिकोण से ही एक बेहतर और निष्पक्ष इतिहास लिखा जा सकता है।

नवीनतम शोध पद्धतियों और तुलनात्मक अध्ययन को अपनाना चाहिए।

हैं।